بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **18.03.2016** बैतुल फ़तूह लंदन।

अल्लाह तआला करे कि हम वास्तविक रूप में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों को समझने वाले हों तथा वास्तविक इलाही प्रेम हममें पैदा हो जाए और हमारा प्रत्येक कार्य एंव कर्म ख़ुदा तआला के आदेशानुसार हो।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

माँ-बाप कई बार बच्चों को तो किसी काम के करने पर कठोरता से डाँटते हैं, अत्यधिक कठोरता दिखाते हैं तथा कुछ लोग बच्चों की ग़लतियों पर इतना अधिक अनदेखा करते हैं कि बच्चे में अच्छे और बुरे में भेद करने की क्षमता नहीं रहती तथा ये दोनो बातें बच्चों के प्रशिक्षण पर बुरा प्रभाव डालती हैं। अधिक कठोरता, बात बात पर अकारण ही तथा तर्कहीन रोकना टोकना बच्चों को विद्रोही बना देता है और फिर वे एक समय बाद उचित बात की भी चिंता नहीं करते। इसी प्रकार बच्चे की प्रत्येक बात में अनुचित पक्षपात भी बच्चों के प्रशिक्षण पर बुरा प्रभाव डालता है। विशेष रूप से ऐसी आयु के बच्चे जो बचपन से निकलकर जवानी में क़दम रख रहे हों उनको, ये जो व्यवहार हैं माता-पिता के, ख़राब करते हैं, विशेषकर बापों के। अतः ऐसी आयु में बच्चों को समझाने के लिए तर्क पूर्ण बात करनी चाहिए तथा विशेकर इस ज़माने में जबकि बच्चों पर केवल अपने सीमित वातावरण का ही प्रभाव नहीं है अपितु पूरे देश, बल्कि इससे भी बढ़कर पूरे विश्व के वातावरण का प्रभाव हो रहा है। ऐसी अवस्था में बापों को विशेष रूप से बच्चों की तर्बियत में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि कहाँ नर्मी करनी है, कहाँ सख़्ती करनी है, किस प्रकार समझाना है। यह बापों का दायित्व है, केवल माओं पर न छोड़ें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किस प्रकार प्रशिक्षित किया करते थे, इसका एक वृत्तांत हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं। घटना का वर्णन करते हैं, तफ़सीर बयान कर रहे हैं ये, कौनसी चीज़े पाक हैं तथा कौनसी पवित्र हैं। आप फ़रमाते हैं कि याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने विभिन्न पशु विभिन्न कार्यों के लिए पैदा किए हैं। कोई सुन्दरता के लिए कि देखने में सुन्दर प्रतीत होता है, कोई आवाज़ के लिए कि उसकी वाणी अति सुरीली है, कोई खाने हेतु कि उसका मांस अच्छा है, कोई औषधि के लिए कि उसके मांस में किसी रोग से अच्छा करने की शक्ति है। केवल जानवर और हलाल देखकर उसे खाना नहीं चाहिए। अतः निःसन्देह हलाल भी है, पवित्र भी है परन्तु फिर देखने वाली बात यह होगी कि अधिक लाभ किस बात में है। अपने लाभ के लिए मानव जाति के लाभ को नष्ट करना होगा अथवा मानव जाति के लाभ को अपने लाभ पर प्राथमिकता देनी होगी। क्यूँकि उनको खाने के कारण मनुष्य कई बार अन्य लाभों से वंचित रह जाएँगे। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे बचपन में ही यह पाठ सिखाया गया था। मैं बचपन में एक बार एक तोता शिकार करके लाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे देखकर कहा कि महमूद, इसका मांस हराम तो नहीं परन्तु अल्लाह तआला ने पत्येक जानवर खाने के लिए ही नहीं पैदा किया। कुछ सुन्दर जानवर देखने के लिए हैं कि उन्हें देखकर आँखें आनन्द पाएँ, कुछ जानवरों को अच्छी आवाज़ दी है कि उनकी वाणी सुनकर कान आनन्द प्राप्त करें। अतः अल्लाह तआला ने मानव की प्रत्येक आवश्यकता के लिए अच्छी चीज़ें पैदा की हैं, वे सारी की सारी छीन कर केवल स्वाद को ही नहीं देनी चाहिएँ।

अतः यह सुन्दर ढंग जो प्रशिक्षण का है, न केवल दिल को प्रभावित करने वाला है बल्कि अल्लाह तआला के उस आदेश को भी मस्तिष्क में बिठाने वाला है कि हलाल और तय्यब तो खाओ परन्तु उसमें भी सावधानी होनी चाहिए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु के द्वारा वर्णित कई अन्य वृत्तांत भी पेश करता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुनया से बिदअतों (दीन में नई नई बातें) को दूर करने तथा इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को दिखाने के लिए आए थे। अतः जब आपका यह मिशन था तो किस प्रकार सम्भव है कि आपकी अपने अस्तित्व से किसी प्रकार की बिदअत फैलने की सम्भावना हो अथवा आप बिदअत फैलाने वाले हों (नऊज़ु बिल्लाह) हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु एक घटना बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम ने स्वयं अपना फ़ोटो खिंचवाया परन्तु जब एक कार्ड आपकी सेवा में प्रस्तुत किया गया जिस पर आपका चित्र था, पोस्ट कार्ड था, तो आपने फ़रमाया कि इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती तथा जमाअत को निर्देश दिया कि कोई व्यक्ति ऐसे कार्ड न ख़रीदे। परिणाम यह हुआ कि भविष्य में किसी ने ऐसा करने का साहस न किया। लेकिन आजकल फिर कुछ स्थानों पर, कुछ ट्वीट्स में, वाट्स अप पर मैंने देखा है कि लोग कहीं से यह कार्ड निकाल कर फैलाने का प्रयास कर रहे हैं, पुराने कार्ड किसी ज़माने में हुए और कहीं, अथवा अपने पूर्वजों से लिए या किसी दुकान से कुछ लोगों ने ख़रीदे, पुरानी पुस्तकों की दुकानों से। तो यह अनुचित कार्य है इसको बन्द करना चाहिए। फ़ोटो आपने इस लिए खिंचवाया था कि बहुत दूर के लोग तथा विशेष रूप से यूरोपियन लोग जो चेहरा देखकर स्वभाव आदि का ज्ञान रखने में निपुण होते हैं, वे आपका चित्र देखकर सत्य की खोज करेंगे, इसका प्रयत्न करेंगे परन्तु जब आपने देखा कि कार्ड पर चित्र छापकर व्यवसाय का साधन ये लोग बनाने का प्रयास कर रहे हैं अथवा न बना लें कहीं। जब आपने यह अनुभव किया कि इसके द्वारा बिदअत न फैलनी आरम्भ हो जाए, यह बिदअत फैलने का कारण न बन जाए तो आपने सख़्ती से इसको रोक दिया बल्कि कुछ स्थानों पर आपने फ़रमाया कि इनको नष्ट करा दिया जाए। अतः कुछ लोग जो चित्रों का व्यापार करते हैं जिन्होंने चित्रों को व्यवसाय का साधन बनाया हुआ है तथा इसके अत्यधिक मूल्य वसूल करते हैं उनको ध्यान देना चाहिए। फिर कुछ ऐसे भी हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चित्र में कुछ रंग भर देते हैं जबकि कोई रंगीन चित्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नहीं है, यह भी बिल्कुल अनुचित कार्य है इससे भी सावधानी बरतनी चाहिए। इसी प्रकार ख़ुल्फ़ा के चित्रों के अनुचित उपयोग हैं, उनसे भी बचना चाहिए। एक बार सिनेमा और बाईस्कोप के बारे में एक शूरा में चर्चा चल पड़ी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु के सामने तो इस पर आपने फ़रमाया कि यह कहना कि सिनेमा अथवा बाईस्कोप या फोनोग्राफ़ अपने अस्तित्व में बुरा है, उचित नहीं। फोनोग्राफ़ स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सुना है बल्कि इस पर स्वयं आपने एक कविता लिक्खी और पढ़वाई तथा फिर यहाँ के हिन्दुओं को बुलवाकर वह कविता सुनाई। यह वह कविता है जिसकी एक पंक्ति यह है कि

आवाज़ आ रही है यह फोनोग्राफ़ से ढूंडो ख़ुदा को दिल से, न लाफ़ो गज़ाफ़ से

अतः सिनेमा अपने अस्तित्व में बुरा नहीं। लोग बड़े सवाल करते हैं कि वहाँ जाना पाप तो नहीं है? यह अपने अस्तित्व में बुरा नहीं है बल्कि इस युग में इसकी जो अवस्थाएँ हैं वे आचरण को बिगाड़ने वाली हैं। यदि कोई फ़िल्म पूर्ण रूप से तबलीग़ी अथवा शिक्षाप्रद हो तथा उसमें कोई अंश तमाशे इत्यादि का न हो तो उसमें कोई आपत्ति नहीं, कोई ड्रामे बाज़ी न हो। आप मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मेरा यही विचार है कि तबलीग़ी तमाशा भी अनुचित है, वर्जित है। अतः इस बात से उन लोगों पर स्पष्ट हो जाना चाहिए जो यह कहते हैं कि एम टी ए पर यदि प्रोग्रामों में कई बार संगीत आ जाए तो कोई बुराई नहीं अथवा वाईस आफ़ इस्लाम रेडियो है, आरम्भ हुआ है, उस पर भी आ जाए तो कोई बुराई नहीं। इन बातों तथा इन बिदअतों को समाप्त करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे। हमें अपनी सोचों को इस ओर ढालना होगा जो आप अलैहिस्सलाम का उद्देश्य था। आधुनिक अविष्कारों से लाभान्वित होना बुरा नहीं, न ही ये बिदअतें हैं परन्तु इनका अनुचित उपयोग बिदअत बना देता है। कुछ लोग ये प्रस्ताव भी देते हैं कि ड्रामें के रंग में तबलीग़ी प्रोग्राम अथवा तर्बियती प्रोग्राम बनाए जाएँ तो वे प्रभाव पूर्ण होंगे। उन्हें याद रखना चाहिए कि यदि आप एक अनुचित काम में लिप्त होंगे अथवा कोई भी अनुचित बात अपने प्रोग्रामों में दाख़िल करेंगे तो सौ प्रकार की बिदअतें अपने आप दख़िल हो जाएँगी। ग़ैरों के विचार में तो सम्भवतः क़ुरआन-ए-करीम भी संगीत के साथ पढ़ना जायज़ है परन्तु एक अहमदी ने बिदअतों के विरुद्ध संघर्ष करना है इस लिए हमें इन बातों से बचना चाहिए तथा बचने का बहुत प्रयास करना चाहिए। जब ये बिदअतें फैलती हैं तो विचार भी इसी प्रकार बदल जाते हैं। डाक्टरों का वर्णन करते हुए एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि भारतीय डाक्टरों में से 99 प्रतिशत ऐसे हैं जो दूसरे से विमर्श करने को भी अपना अपमान समझते हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नियम था और मैं स्वयं भी 1918 ई. में जब बीमार हुआ हूँ तो मैंने भी ऐसा ही किया कि वैद्य और डाक्टर सब एकत्र कर लिए तथा डाक्टरों की दवाई भी खाता था और वैद्यों की भी, क्या पता अल्लाह तआला किस के द्वारा स्वस्थ कर दे। यदि कोई डाक्टर अपने आपको ख़ुदा समझता है तो समझे हम तो उसे बन्दा ही समझते हैं।

कई बार सामान्य जड़ी बूटियों के द्वारा उपचार करने वाले लोग विधिवत् वैद्य भी नहीं होते, कुछ नुस्खे उनके पास आ जाते हैं और वे इलाज करते हैं तथा उत्तम इलाज करते हैं रोगी का। वहाँ जहाँ कई बार डाक्टर फ़ेल हो जाते हैं कोई इलाज कारगर नहीं होता वहाँ उनके ये उपचार अथवा टोने टोटके काम आ जाते हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि सय्यद अहमद नूर साहब काबली के नाक पर घाव था, उन्होंने कई इलाज कराए, लाहौर के हस्पताल भी गए। एक्सरे कराकर इलाज कराया कि क्या कारण है पता लगे परन्तु घाव और भी बिगड़ता गया। अन्ततः वे पेशावर गए वहाँ एक नाई से इलाज कराया। उसने केवल तीन

दिन दवाई उपयोग कराई और घाव ठीक हो गया। तो आप फ़रमाते हैं कि अब ऐसे निपुण व्यक्ति मौजूद हैं जिनको ऐसी ऐसी विद्याएँ आती हैं कि यदि उनको जीवित रक्खा जाए तो उनके द्वारा भविष्य में कई नई विद्याएँ जारी हो सकती हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि एक नाई था जिसे ऐसे मल्हम का ज्ञान था जिसके द्वारा बड़े बड़े घाव, ख़राब घाव भी अच्छे हो जाते थे। लोग दूर दूर से उसके पास इलाज कराने के लिए आते थे। उसका बेटा उससे नुस्ख़ा पूछता तो वह जवाब देता कि इसके जानने वाले दुनया में दो नहीं होने चाहिएँ। अतः मेरे पास है यह विद्या, यहीं रहेगा, बेटे को भी नहीं बताना। अन्ततः वह वृद्ध हो गया तथा बड़ा बीमार हुआ तो उसके बेटे ने कहा कि अब तो बता दें, जीवन का पता कुछ नहीं। वह कहने लगा कि अच्छा यदि तुम समझते हो मैं मरने लगा हूँ तो बता देता हूँ। परन्तु फिर कहने लगा कि क्या पता मैं अच्छा ही हो जाऊँ इस लिए फिर बताने से रुक गया और कुछ घन्टों के पश्चात उसकी जान निकल गई और उसका बेटा बेचारा पूछता रह गया, विद्या से वंचित रह गया। आप फ़रमाते हैं कि कंजूसी प्रगति की नहीं बल्कि अपमान तथा बदनामी का कारण बनती है इस लिए ऐसे मामलों में, ज्ञान के मामलों में कंजूसी नहीं करनी चाहिए इसको फैलाने का प्रयास करना चाहिए। इन पेशों एंव विद्याओं का सिखाना हानि कारक नहीं अपितु लाभप्रद है इसके द्वारा ज्ञान उन्नति करता है और मैं चाहता हूँ कि ये विद्याएँ, विशेष रूप से मृत विद्याओं को उन्नति दी जाए। अतः कहीं अहंकार का कारण बन रहे होते हैं डाक्टर, दूसरे के लिए इस अहंकार के कारण, कठिनाई का कारण बन रहे होते हैं और कभी मूर्खता जो है, वह विद्या का विनाश कर देती है और फिर वह लाभ जो दुनया को पहुंच रहा होता है उससे दुनया वंचित रह जाती है। तो यह अप्रगति शील अथवा उन्नत देशों में सामान्य प्रवृत्ति हैं वहाँ। जमाअत अहमदिया को विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए कि इस अज्ञानता को दूर करें। मनुष्य की विभिन्न प्रवृत्तियाँ होती हैं, कुछ निष्ठा में बढ़े हुए होते हैं तथा प्रत्येक बात को खुले दिल से मानते हैं, कुछ जल्दबाज़ होते हैं, बुरी नीयत न भी हो तब भी आपत्ति कर देते हैं अथवा ऐसे रंग में बात करते हैं जिसमें आपत्ति का रंग हो। ऐसे ही लोगों का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक बार ऐसे ही दो प्रवृत्तियों का मिलन हो गया अर्थात एकत्र हो गए एक स्थान पर। 4 अप्रैल 1905 ई. को जो भयानक भूकंप आया उस अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भूकंपों के सम्बंध में बड़े इलहाम हुए। बड़ी अधिक संख्या में इलहाम हुए कि अब भूकंप आएँगे तो आप ख़ुदा तआला के कलाम का आदर सम्मान करते हुए अपने बाग़ में तशरीफ़ ले गए। कई मूर्ख उस समय भी कह दिया करते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम प्लेग से डर कर बाग़ में चले गए हैं। जबकि ताऊन के डर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपना घर भी नहीं छोड़ा।

अतः उत्सुक मनोवृत्ति कई बार बिना सोचे समझे आपत्ति जनक बात कर देती है और इससे दोस्तों को बचना चाहिए। ख़ुत्बा-ए-इलहामियः के बीच हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जिस प्रकार देखा, उसे बयान करते हुए आप फ़रमाते हैं कि मुझे ख़ूब याद है यद्यपि मैं छोटा आयु का होने के कारण अरबी भाषा न समझ सकता था परन्तु आपकी ऐसी सुन्दर तथा प्रकाशमयी अवस्था बनी हुई थी कि मैं आरम्भ से लेकर अन्त तक निरन्तर तक़रीर सुनता रहा, जबकि एक शब्द भी न समझ सकता था।

मस्जिद मुबारक क़ादियान के महत्त्व का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने यह वृत्तांत बयान फ़रमाया कि कुछ दोस्तों ने निवेदन किया कि ख़ुत्बा-ए-इलहामियः के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो इश्तिहार शामिल है उससे ज्ञात नहीं होता कि मस्जिद मुबारक कौनसी है। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने मंगवाकर वह इश्तिहार पढ़ा और समझाया कि इससे अभिप्रायः यही मस्जिद है जो हज़रत मसीह मौऊद ने बनाई है तथा फिर आपने निम्नलिखित रिवायत आपने यह बयान फ़रमाई कि एक बार उम्मुलमोमिनीन बीमार हो गईं और लगभग 40 दिन तक बीमार रहीं। एक दिन हज़रत साहब ने फ़रमाया कि इस मस्जिद के विषय में इलहाम है। इसके तो संक्षिप्त शब्द आपने बयान किए हैं, मूल इलहाम इस प्रकार है कि مُبَارِك وَ مُبَارَك و كل امر مبارك يجعل فيه अर्थात आपने फ़रमाया कि यह इलहाम है तो चलो, क्यूँकि यह इलहाम है इस मस्जिद के बारे में, इसमें चलकर दवाई देते हैं, हज़रत अम्मां जान को वहाँ जाकर दवाई देते हैं मस्जिद में, तो आपने वहाँ आकर दवा पिलाई और दो घन्टे की अन्दर उम्मुलमोमिनीन अच्छी हो गईं। डाक्टरों को एक उपदेश कि दीन की सेवा का उन्हें हक़ अदा करना चाहिए। फ़रमाते हैं कि बीमारों पर सत्य एंव यथार्थ का प्रभाव बड़ी जल्दी होता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक डाक्टर ने पूछा मैं क्या सेवा कर सकता हूँ दीन की? आपने फ़रमाया कि आप बीमारों को तबलीग़ किया करें, यह बड़ा अच्छा अवसर होता है क्यूँकि बीमार का दिल कोमल होता है।

अतः यह सोच इस ज़माने के डाक्टरों को भी रखनी चाहिए और यही सोच तथा कर्म फिर दुनया कमाने के साथ दीन की सेवा का अवसर देकर अल्लाह तआला की कृपाओं को प्राप्त करने वाला भी बनाएगा। पर्दे की समस्या को आजकल यहाँ पश्चिमी

देशों में बड़े ज़ोर शोर के साथ उठाया जाता है महिलाओं के अधिकारों के नाम पर अथवा आतंकवाद को नष्ट करने के नाम पर या अकारण ही इस्लाम पर आपत्ति करने के लिए। अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में इसके विभिन्न पहलुओं को बयान किया है कि किस प्रकार का पर्दा करना चाहिए, किन परिस्थितियों में करना चाहिए। इसमें महिलाओं की साज सज्जा के प्रकट होने के विषय में भी यह फ़रमाया है कि الا ما ظهر منها इसकी व्याख्या करते हुए तथा इसके सम्बंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जो कथन है, वह पेश करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि الا ما ظهر منها का यह अर्थ है कि वह अंग जो आप ही आप प्रकट हो तथा जिसे किसी विवशता के कारण छिपाया न जा सके चाहे यह विवशता बनावट के कारण हो, अर्थात बनावट यह नहीं कि ज़ाहिरी बनावट बल्कि शरीर की बनावट जैसे कि लम्बा आकार है कि यह भी एक शोभा है परन्तु इसको छिपाना असम्भव है इस लिए इसको प्रकट करने से शरीअत नहीं रोकती अथवा बीमारी के कारण हो कि शरीर का कोई अंग इलाज के लिए डाक्टर को दिखाना पड़े तो वह भी प्रकट किया जा सकता है। अतः इस्लाम ने स्वतंत्रता भी स्थापित की है तथा सीमाएँ भी बाँधी हैं, खुली छुट्टी न दे दी। कुछ विवशताओं के कारण अनुमति है कि पर्दे को कम किया जा सकता है, कम स्तर का किया जा सकता है परन्तु साथ ही अकारण कोई नाजायज़ रूप से कि इस्लाम के आदेशों की अवहेलना, इससे भी मना फ़रमाया है। स्वतंत्रता के नाम पर निर्लज्जता नहीं रक्खी इस्लाम ने।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के धार्मिक सद्ज्ञान का वर्णन करते हुए हज़रत मुसलेह मौऊद फ़रमाते हैं कि इस्लाम में समस्याओं का आधार सद्ज्ञान पर है। उनके भीतर सूक्ष्म हिकमतें होती हैं और जब तक उनको न समझा जाए इंसान धोखा खाकर कई बार गुमराही की ओर निकल जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार किसी मज्लिस में बयान फ़रमाया कि इंसान यदि तक़्वा से काम ले चाहे सौ शादियाँ कर ले। एक ज़माने में यह बात भी विचाराधीन आई। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने फ़रमाया, चार पत्नियों की सीमित संख्या शरीअत से प्रमाणित नहीं और अबू-दाऊद की एक रिवायत भी पेश की, जिसमें लिक्खा था कि हज़रत इमाम हसन के अट्ठारह या उन्नीस निकाह हुए। हज़रत मौलवी साहब ने यह हवाला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिखाने के लिए भेजा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मौलवी साहब से जाकर पूछो कि यह कहाँ लिक्खा है कि यह सारी बीवियाँ एक ही समय में थीं। फिर यह बात समाप्त हो गई कि चार से अधिक शादियाँ भी इस प्रकार नहीं हो सकतीं तथा इसमें भी शर्तें हैं और तक़्वा सबसे बड़ी शर्त है। इमाम की पुकार पर लब्बैक कहना, इसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि इमाम की आवाज़ की तुलना में सामान्य व्यक्ति की आवाज़ कोई महत्त्व नहीं रखती। तुम्हारा कर्त्तव्य है कि जब भी तुम्हारे कानों में ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ आए, तुम तुरन्त उस पर लब्बैक कहो तथा उसके आज्ञा पालन के लिए दौड़ पड़ो कि इसी में तुम्हारी प्रगति का भेद छिपा है अपितु यदि इंसान उस समय नमाज़ भी पढ़ रहा हो तब भी उसका कर्त्तव्य है कि वह नमाज़ तोड़ कर ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ का जवाब दे। कुछ लोगों ने इस पर आपत्ति की तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह आयत पढ़ी कि لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۴﴾ कि तुम्हारे बीच रसूल का तुम्हें बुलाना इस प्रकार न बनाओ जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो, ऊँची आवाज़ों में अथवा यह समझते हो कि बुलाया है जवाब दे दिया या न दिया। अल्लाह तआला निःसन्देह उन लोगों को जानता है जो तुम में से नज़र बचाकर चुपके से निकल जाते हैं। अतः वे लोग जो इस आदेश की अवहेलना करने वाले हैं वे इस बात से डरें कि उन्हें कोई परीक्षा आ जाए अथवा भयावह यातना आ पहुंचे। तो इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर आया है कि يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ कि ऐ मोमिनो! तुम अल्लाह और उसके रसूल की बात सुनने के लिए तुरन्त उपस्थित हो जाया करो जबकि वह तुम्हें जीवित करने के लिए पुकारे।

इस प्रकार नबी की आवाज़ पर तुरन्त लब्बैक कहना एक अनिवार्य कर्म है बल्कि ईमान के निशानों में से एक बड़ा भारी निशान है। प्रत्येक कार्य अल्लाह तआला की प्रसन्नता तथा उसके आदेशों पर चलते हुए करें। लोगों को प्रसन्न करने के लिए नहीं काम करना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक बार एक मज्लिस में किसी ने निवेदन किया कि हमारी जमाअत के अधिकांश लोग दाढ़ियाँ मुंडवाते हैं। आपने फ़रमाया कि वास्तविक चीज़ तो अल्लाह से प्रेम है जब उन लोगों के दिलों में मुहब्बत-ए-इलाही पैदा हो जाएगी तब स्वयं ये लोग हमारा अनुकरण करने लग जाएँगे।

अल्लाह तआला करे कि हम वास्तविक रूप से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों को समझने वाले हों तथा अल्लाह से वास्तविक प्रेम हम में पैदा हो जाए तथा हमारा प्रत्येक कार्य एवं कर्म ख़ुदा तआला के आदेशानुसार हो। ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम अब्दुन्नूर जाबी साहब आफ़ सीरिया की शहादत का विवरण बयान फ़रमाया तथा आदरणीय के सदगुणों का वर्णन फ़रमाया और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।